Poonam Shodh Rachna (ISSN 2456-5563)
(A Multidisciplinary, Peer Reviewed And Refereed Journal)
Vol.3, Issue.II, February 2024, Pc : PSR-2402024
Special Issue of International Seminar on Emerging Trends in Humanity and Social Sciences Research

"कोविड–19 का विद्यालयी शिक्षा पर प्रभाव :एक अध्ययन"

Dr.Mukesh Yadav, Assistant Professor
Baba khetanath Mahila T.T.College, Bhitera, Behror, Kotputli

सारांश *– 21वीं भाताब्दी की वैशिवक अर्थव्यवस्था ऐसे वातावरण में उन्नति कर सकती है जो रचनात्मक एवं विवेचनात्मक भाोध और समस्या के समाधान से सम्बन्धित कौशल पर आधारित हो। जिसके लिए विद्यालयी शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर भविशय के लिए योग्य एवं कुशाल नागरिक तैयार किये जाते हैं। विद्यालयी शिक्षा ने जो रफ़्तार पकड़ी थी, उसे कोविड–19 ने एक झटके में रोक दिया। आज कोविड–19 के कारण अनेक बालकों का विद्यालय या शिक्षा से सम्पर्क टुट गया है कोरोना महामारी के भय से देशा में छात्रों की मनःस्थिति कमजोर हुई है। यह एक जटिल समस्या है। जिससे बच्चों की विद्यालयी शिक्षा अत्यधिक प्रभावित हुई है। बच्चों की विद्यालयी शिक्षा प्रभावित न हो इसके लिए उच्च तकनीक, निम्न तकनीक और किसी तकनीक वाले समाधान तलाशाने के प्रयास करने होंगे। अतः यह एक शोध का विषय है कि कोविड–19 महामारी ने विद्यालयी शिक्षा को किस प्रकार प्रभावित किया है? प्रस्तुत भाोध में कोविड–19 का विद्यालयी शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। विद्यालयी शिक्षा के महत्व को समझते हुए कोविड–19 का विद्यालयी शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन शिक्षा की समस्याओं के एक पहलु पर प्रकाशा डालना है जिससे शिक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाया जा सके।*
मुख्य भाब्द *– (अ) कोविड–19 –(ब) विद्यालयी शिक्षा*

अध्ययन का महत्त्व :– देशा तथा समाज के लिए उपयोगी, कुशाल तथा सुविकसित राश्ट्र निर्माण के प्रति समर्पित नागरिकों का निर्माण करने में शिक्षा की अद्वितीय भूमिका रही है। इस तथ्य को दृश्टि में रखते हुए वैशिवक स्तर पर बच्चों के शिक्षा सम्बन्धी अधिकार को मूल अधिकार के रूप में अंगीकृत किया गया है।

सभी के लिए शिक्षा की (Education for All) विशवस्तरीय घोशणा में केवल शिक्षा तक पहुँच के विस्तार की आवशयकता पर ही नहीं अपितु इस आशवासन के महत्व पर भी बल दिया गया कि बच्चों तथा वयस्कों को दी जाने वाली शिक्षा उच्च गुणवत्ता युक्त हो। निःसंदेह गुणवत्ता के संवर्द्धन में किसी न किसी प्रकार इसके मापन का आशाय निहित है।

हाल ही में विकासशाील देशाों में किये गये मूल्यांकन सर्वेक्षणों से प्राप्त निश्कर्श के सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि एक ही देशा के विभिन्न क्षेत्रों में बच्चों की सम्प्राप्तियों में विकसित अन्तर राश्ट्रों के मध्य पाये जाने वाले अन्तरों की तुलना में कई गुना अधिक है। ऐसे में स्थानीय तथा राश्ट्रीय स्तर पर सतत् मूल्यांकन की क्षमता विकसित करने के संदर्भ में इस विशय पर गहन चिन्तन तथा यथोचित निर्णय करने की महती आवशयकता है।

एक ओर भारत में अभी तक बड़ी संख्या में लोग निरक्षर है। वहीं दूसरी ओर बहुत से बच्चे ठोस रूप में प्राथमिक शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाते हैं। यह भारत के सामने एक बड़ी चुनौती है। इसी चुनौती को ध्यान में रखते हुए जहाँ एक ओर भारत सरकार ने संविधान में संशाोधन कर शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया है, वहीं इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विभिन्न परियोजनायें संचालित की गई हैं लेकिन इसके बाबजदू अनके चुनौतियों तथा अवरोधों का सामना करना पड़ रहा है। सार्वभौम नामांकन तथा ठहराव के साथ ही गुणवत्ता सुधार हेतु व्यापक स्तर पर आन्दोलन संचालित किया जा रहा है। जिसमें ग्राम, न्याय पंचायत, ब्लॉक तथा जिला स्तर कें संसाधन केन्द्र व समितियों उल्लेखनीय योगदान कर रही हैं। किन्तु फिर भी हम वर्तमान समय तक सभी बच्चों को प्रारम्भिक स्तर तक कि शिक्षा उपलब्ध नही करा पाये थे।

इसके साथ ही कोरोना महामारी के कारण विद्यालयी शिक्षा पूरी तरह से प्रभावित हो गयी। मजबूरन बालकों को विद्यालय आने से रोका गया जिससे न केवल उनके अधिगम की निरन्तरता बाधित हुई है बल्कि अनेक बालकों का शिक्षा से सम्पर्क ही टुट गया। कोरोना के कारण विद्यालयी शिक्षा पर अध्यापक, विद्यार्थी, भौक्षिक वातावरण, स्वास्थ्य तथा मानसिक जैसे अनेक आयामों से सकारात्मक व नकारात्मक रूप से प्रभाव देखा गया है जिसका अध्ययन विद्यालयी शिक्षा के विकास के लिए आवशयक एवं महत्वपूर्ण है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि देखें तो पिछले कुछ समय से कोविड–19 के कारण एक ऐसे वातावरण का सृजन किया है, जिसमें विद्यालयी शिक्षा बहुत प्रभावित हो रही है। वर्तमान में बदलते परिवेशा के आधार पर हमारी विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था को लेकर अनेक अपेक्षाएं हैं, तथा अपने चारों तरफ दृष्टि डालने पर यह ज्ञात होता है, कि वर्तमान की शैक्षिक माँगों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था परिपूर्ण दिखाई नही दे रही है। विद्यालयी शिक्षा पर भी कई तरह के सवाल उठ खड़े हो रहे हैं। ऐसे में कोविड–19 का विद्यालयी शिक्षा पर प्रभाव किस प्रकार का है? इसके संदर्भ में पुनः चिंतन व पुनर्गठन करना होगा। तभी जाकर विद्यालयी शिक्षा अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगी। अतः इस दृष्टि से देखे तो यह शोधकार्य पर्याप्त औचित्यपूर्ण एवं सार्थक नजर आता है।

उपर्युक्त बिन्दुओं के परिप्रेक्ष्य में विद्यालयी शिक्षा के विकास के लिए जहाँ जनसमुदाय में शिक्षा के महत्व एवं प्रासंगिकता की चेतना विकसित करने के साथ साथ कोरोना महामारी के प्रति जागरूकता एवं शिक्षा के उपायों के प्रति जागरूकता की आवशयकता है, वहीं उपयुक्त अधिगम वातावरण का निर्माण भी अपेक्षित है। संयुक्त राश्ट्र की संस्था, विशव स्वास्थ्य संगठन द्वारा कारोना वायरस को वैशिवक महामारी घोशित करते ही इससे निपटने के प्रयास तेज कर दिए गए। लगभग सारे विद्यालय बन्द हो गये इससे विद्यालय में शिक्षा प्रभावित हुई। संयुक्त राश्ट्र की संस्था की रिर्पोट के अनुसार प्रत्येक पांच में से एक विद्यालयी छात्र की शिक्षा प्रभावित हुई है। एक द्वार बंद होने से सारे द्वार बंद नहीं होते इस कहावत को लगनशील अध्यापकों ने सही साबित करके दिखाया है। अध्यापकों ने छात्रों को पढ़ाने के लिए ऑनलाइन कक्षा का बेहतरीन विकल्प निकाला है। जिससे प्रतिदिन लाखों छात्र अपने अध्यापकों से जुड़ कर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

कोविड–19 के कारण हमारी दुनियां एकदम बदल गई है। लाखों लोगों की जान चली गई, कई बिमार पड़े, इन सब पर कोरोना का कहर टुटा है। लेकिन अब रहन सहन बदल गया है। वैक्सीन के कारण अब उनमें उम्मीद की नई किरण जागी है जिससे छात्रों की मनोस्थिति में भी सुधार हुआ है, छात्रों में भी राश्ट्रवाद की भावना जगी है। लेकिन विद्यालयी शिक्षा पर कई दूरगामी प्रभाव पड़े है जिनमें कुछ सकारात्मक भी है तथा कुछ नकारात्मक भी है। विद्यालयी शिक्षा के विकास के लिए इन प्रभावों का अध्ययन आवशयक और महत्वपूर्ण हो जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए भाोधकर्ता ने कोविड–19 का विद्यालयी शिक्षा पर प्रभाव : एक अध्ययन को अपना भाोध विशय बनाया है जो महत्वपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देशय :–

- कोविड–19 का विद्यालयी शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।
- कोविड–19 का विद्यालयी शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

समस्या कथन :– "कोविड–19 का विद्यालयी शिक्षा पर प्रभाव :एक अध्ययन"

भाोध विधि :–प्रस्तुत भाोध में तथ्यों के संग्रह हेतु विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। संबंधित तथ्यों का संग्रह इटंरनेट, पुस्तकालय, पत्र–पत्रिकाओं एवं भाोध पुस्तिकाओं के द्वारा किए गये है।

कोविड–19 का विद्यालयी शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव :

1. **ऑनलाइन शिक्षा का विकास** – कोरोना के प्रभाव के कारण विद्यालयी शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा को विकल्प के रूप में विकसित होने में सकारात्मक भूमिका निभाई है। लॉकडाउन तथा स्वास्थ्य की चिंता के कारण सरकार, विद्यालय प्रशाासन, अध्यापकों, अभिभावकों तथा स्वयं छात्रों द्वारा शिक्षा में पिछड़ जाने के डर से इस विकल्प को अपनाने में एक साथ सहयोग दिया जिसका परिणाम आज पुरे भारत में ऑनलाइन शिक्षा को विकल्प के रूप में देखने को मिल रहा है। यह सामूहिक प्रयास कोरोना के प्रभाव के कारण हुआ है। सरकार द्वारा विभिन्न ऑनलाइन शिक्षा के विकल्पों को विकसित तथा संचालित करने का प्रयास किया गया, विद्यालय प्रशाासन द्वारा इसे चेतनापूर्ण तरीके से अपनाया गया, शिाक्षकों द्वारा ऑनलाइन शिक्षा के विकल्प पर मेहनत की गई, अभिभावकों द्वारा ऑनलाइन शिक्षा के साधनों को किसी भी तरह के प्रयास करके जुटाया गया तथा विद्यार्थियों द्वारा ऑनलाइन शिक्षा के विकल्प को पूर्ण चेश्ठा के साथ अपनाया गया तब जाकर यह एक शिक्षा का वृहद माध्यम बना है जो सरकार को बालकों तक शिक्षा की पहुंच के लक्ष्य को आसान बनाने के लक्ष्य में एक विकल्प के रूप में कार्य कर सकेगा, विद्यालय प्रशाासन को विद्यालय की शिक्षा के विकास में सहयोग प्रदान कर सकेगा, शिाक्षकों को किसी भी विशय को बार बार समझाने की मेहनत को कम कर सकेगा इसके साथ साथ शिक्षा के कई अनावशयक खर्चों से अभिभावकों को बचाता है यथा बालकों की ट्यूशान के खर्चे में, बालक के आने–जाने की असुविधाओं से आदि में मदद मिलेगी और विद्यार्थियों को सीखने के एक नये तथा रोचक तरीके से ज्ञान प्राप्त हो सकेगा। लॉकडाउन के बाद, विद्यालयों ने ऑनलाईन कक्षाओं की पेशाकशा की। उदाहरण के लिए जून–जुलाई, 2020 में 22 प्रतिशात ग्रामीण और 31 प्रतिशात ाहरी 6–19 वर्शा के बच्चों के अभिभावकों ने बताया कि उनके ऑनलाइन भाग ले रहे थे, लेकिन अक्टुबर–नवम्बर के दौरान संबन्धित आंकड़ों में सूधार हुआ, वह 50 प्रतिशात ग्रामीण तथा 74 प्रतिशात भाहरी ऑनलाइन कक्षाओं तक पहुंच स्थानों के बीच महत्वपूर्ण रूप से भिन्न थी, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में भाहरी लोगों के पास मोबाइल फोन ऑनलाइन उपस्थित होने का प्राथमिक साधन थे, विद्यालयों के माध्यम से कक्षाएं, इसके बाद इंटरनेट लिंक और टेलीविजन साझा करना भाहरों में आसान हुआ।

2. **शिक्षा के प्रति चेतना का विकास** – कोरोना के कारण सरकार, विद्यालय प्रशाासन, अध्यापकों, अभिभावकों तथा स्वयं छात्रों में शिक्षा में पिछड़ जाने की चिंता देखने को मिली। सरकार द्वारा शिक्षा के निर्धारित लक्ष्यों को पाने में पिछड़ जाने की चिंता, विद्यालय प्रशाासन द्वारा अपने व्यवसाय के ठप्प हो जाने की चिंता, अध्यापकों द्वारा अपने रोजगार को बचाने की चिंता इसके साथ साथ अभिभावकों में भी भविश्य में इस प्रकार की स्थितियों से निपटने के लिए अपने बच्चों को शिाक्षित करने का जज्बा देखने को मिला। अभिभावकों को इस बात की भी चिंता थी कि इस प्रकार के स्वास्थ्य के खतरे भविश्य में बढ़ सकते हैं अगर बच्चों को शिाक्षित कर उन्हें उचित रोजगार के योग्य बना दिया जाये तो वे उनसे दूर नहीं होंगे नही ंतो उन्हें भी रोजगार के लिए भविश्य की ऐसी स्थितियों में बाहर निकलना पड़ेगा। भविश्य में शिक्षा की आवशयकता को लोगों ने इस स्थिति से गहराई से समझा है।

3. शिक्षा के नये विकल्पों का आसानी से अपनाना– कोरोना के कारण शिक्षा के नये–नये विकल्पों को अपनी–अपनी सुविधा के अनुसार अपनाया गया। इन विकल्पों को अगर साधारण स्थिति में लागु किया जाता तो इस तरह जागरूकता से लोगों द्वारा अपनाया जाना संभव नहीं था। कोरोना महामारी ने इस प्रकार की स्थितियां पैदा कर दी कि ये विकल्प लोगों ने बहुत ही आसानी से ग्रहण कर लियें

4 **बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का विकास**– कोरोना के कारण सरकार, विद्यालय प्रशाासन, अध्यापकों, अभिभावकों तथा स्वयं छात्रों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता देखने को मिली जो बच्चों के ाारीरिक विकास के लिए बहुत आवशयक है। सरकार द्वारा बालकों के स्वास्थ्य को गंभीरता से लिया गया तथा आवशयक निर्देशा जारी किये गये, विद्यालय प्रशाासन द्वारा इन निर्देशाों को गंभीरता से लागु किया गया, तथा अध्यापकों, अभिभावकों तथा स्वयं छात्रों द्वारा जागरूकता के साथ इन निर्देशाों का पालन किया गया। यदि स्वास्थ्य के प्रति इस प्रकार की चेतना भविशय में भी बनाये रखी गई जो आने वाली पीढ़ी स्वस्थ ाारीर तथा स्वस्थ मानसिकता वाली होगी जो शिक्षा के विकास में योगदान दे सकेगी।

5. शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा– आज कोरोना के कारण सरकार, विद्यालय प्रशाासन, अध्यापकों, अभिभावकों तथा स्वयं छात्रों में शिक्षा के प्रति गंभीरता देखने को मिलती है। सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति में शिक्षा के क्षेत्र में नवीन भाोध, तथा नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है। विद्यालयों में भी प्रशाासन द्वारा शिक्षा के विकास के लिए नये नये विकल्पों की खोज की जा रही है। अभिभावक भी अपने बालक को ऐसी शिक्षा प्रदान करने के प्रति जागरूक देखे गये जिससे उनके कौशाल का विकास हो जिसमें बच्चों को कम्प्यूटर कोडिंग जैसे कौशाल शिक्षा के नये नये नवाचारों के प्रति जागरूकता देखने को मिली है।

6. शिक्षा के प्रति सामूहिक प्रयास को बढ़ावा – सामान्य दिनों में प्राय अभिभावकों द्वारा बालकों के विद्यालय में नामांकन के बाद उनकी शिक्षा पर विशोशा ध्यान नहीं दिया जाता था। अध्यापकों द्वारा भी अध्यापन के तरीकों में खास नवीनता नहीं देखने को मिलती थी, इसी तरह विद्यालय प्रशाासन द्वारा भी विद्यालय में शिक्षा को व्यवसाय के रूप में विकसित करने पर जोर दिया जाता था। कोरोना के कारण विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में चेतना का संचार हुआ जिसके कारण शिक्षा के नवीन विकल्पों पर सामूहिक प्रयास किया गया। निजी क्षेत्र से लेकर सरकारी तंत्र, विद्यालय प्रशाासन, अध्यापकों, अभिभावकों तथा स्वयं छात्रों द्वारा शिक्षा के विकास में सामूहिक प्रयास किये गये जिसके परिणाम स्वरूप आज विद्यालय शिक्षा के विकल्पों में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं।

7. निम्न वर्ग के विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा से जोड़ने के अधिक प्रयास –कोरोना के कारण निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की विद्यालयी शिक्षा सबसे ज्यादा प्रभावित हुई जिसके कारण अधिकतर निम्न वर्ग के विद्यार्थी शिक्षा से दूर होते गये। सरकार द्वारा समय रहते इन विद्यार्थियों को विद्यालय से जोड़े रखने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रयास किये गये हैं। बच्चों के लिए SMILE प्रोग्राम लागु किया गया जिसमें अध्यापकों द्वारा घर घर जाकर बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के प्रयास किये गये। इसके साथ साथ इन बच्चों को पहले मिड–डे मील दिया जाता था, जो विद्यालय बन्द होने के कारण सरकार द्वारा प्रत्येक बच्चे के हिसाब से उनके परिवार को राशान उपलब्ध करवाया गया। इन प्रयासों के कारण निम्न वर्ग के बालकों के विद्यालय में ठहराव को रोकने में सरकार के प्रयास सराहनीय रहे हैं।

8. गम्भीर परिस्थिति में प्रयासों की सराहना– कोरोना महामारी में अध्यापकों द्वारा शिक्षा एवं शिाक्षण की प्रक्रिया को निरन्तर बनाये रखने के लिए किये गये प्रयास सरहनीय रहे। सरकार द्वारा उन्हें कोरोना वॉरियर की श्रेणी में रखा गया तथा उनके स्वास्थ्य के प्रति भी गम्भीरता देखी गई। उनकी लगातार जांच तथा वैक्सीन में प्राथमिकता दी गई।

9. अभिभावकों में बच्चों के स्वास्थ्य एवं शिक्षा के प्रति जागरूकता का विकास –कोरोना के कारण अभिभावकों में अपने बच्चों के स्वास्थ्य तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता देखी गई। वे अपने बच्चों के स्वास्थ्य एवं शिक्षा के प्रति गंभीर देखे गये। वे बच्चों के लिए वैक्सीन उपलब्ध ना होने पर चिंतित देखे गये। आज तक ने अपनी रिर्पोट में बताया कि "अधिकतर अभिभावक अपने बच्चों को वैक्सीन लगवाने में जागरूक देखे गये। इसके साथ साथ अभिभावकों द्वारा बच्चों की शिक्षा के लिए विकल्पों की तलाशा एवं अपनाने में सहयोग प्रदान किया गया।"

10. साफ–सफाई के प्रति जागरूकता का विकास– कोरोना के कारण अभिभावकों व बालकों में साफ–सफाई के प्रति जागरूकता देखी गई है। बार बार हाथ धोने तथा अपेन आप को साफ–सुथरा रखने की चेतना में सुधार आया है। नवभारत टाइम्स की रिर्पोट में बताया गया है कि "कोरोना के कारण साफ–सफाई से जुड़े उद्योगों तथा उत्पादों में 25 प्रतिशात की वृद्धि देखी गई है। लोगों के जीवनशौली बदल गई है।"

11. अनुशाासन की समझ का विकास – विद्यालयी शिक्षा में अनुशाासन का होना आवशयक होता है बिना अनुशाासन शिक्षा ग्रहण करने में समस्या तो आती ही हैं इसके साथ साथ अनुशाासनहीनता के साथ शिक्षा का कोई औचित्य ही नहीं है। कोरोना के कारण विद्यार्थियों में अनुशाासन की समझ का विकास हुआ है। मास्क लगाना, बार–बार हाथ धोना तथा साफ–सफाई के प्रति जागरूकता का मुख्य कारण कोरोना का डर ही था जिसको विद्यार्थियों ने बहुत ही करीब से अनुभव किया तथा अनुशाासन की आवशयकता को समझा है।

कोविड–19 का विद्यालयी शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव :

1. **बच्चों में तनाव अवसाद का विकास** –लगातार एक जगह बने रहना बच्चों के लिए असहजता उत्पन्न करताा है, दुशिचंता एवं तनाव को बढ़ाता है। इस दुशिचंता एवं तनाव को कब, कहां और किस प्रकार से अभिव्यक्त करना है, इस मामले में बच्चों की समझ एक तरह से अपरिपक्व होती है। लॉकडाउन की वजह से बच्चों में कुछ विशोश व्यवहार नजर आ रहे हैं, जैसे चिड़चिड़ापन, झुंझलाहट, जिद्द, बातों को अनसुना कर देना, निर्देशा न मानना आदि। प्रायः माता–पिता या अभिभावक इन व्यवहारों को अनुशाासनहीनता या अवज्ञा के रूप में देखते हैं। माता–पिता की कुछ विशोश प्रकार की टिप्पणियों से इसका अंदाजा लगाया जा सकता है – घर पर हो इसलिए जिद्द कर रहे हो, स्कूल जाते तो पता लगता, बहुत दिन से स्कूल नहीं गये ना, इसलिए तुम्हारे नखरे बढ़ गये हैं, पढ़ते हो कि नहीं, तुम्हारी मैडम को फोन करूँ, है, भगवान इससे अच्छा स्कूल खुल जाते इस प्रकार की मिलती–जुलती बातें बच्चों को सुनने को मिल रही हैं। बच्चे इस प्रकार का व्यवहार क्यों कर रहे हैं इसकी तह में जाने की कोशिशा नहीं हो रही है और बहुत से माता–पिता इस तरह का नजरिया भी नहीं रखते हैं। दरअसल बच्चों में इस प्रकार के विशोशा व्यवहार की पृशठभूमि में तनाव, अवसाद एवं दुशिचंता है। इन्हें जानने समझने की जरूरत है। दरअसल समाचार या मीडिया में बताई जा रही बढ़ती मौतों की संख्या से बच्चे आहत से हैं जिसके कारण उन पर भावनात्मक असर अधिक दिखाई देता है।

2. **छात्रों की मनःस्थिति पर दुशप्रभाव** – कोरोना महामारी के भय से हमारे भारत देशा के छात्रों की मनःस्थिति कमजोर हुई है। यह एक जटिल समस्या है। बच्चों को विद्यालयी शिक्षा प्रभावित ना हो, इसके लिए सभी देशाों को मिलकर उच्च तकनीक, निम्न तकनीक और बिना किसी तकनीक के समाधान तलाशाने चाहिए जिसके लिए संयुक्त राश्ट्र महासभा और आर्थिक व सामाजिक परिशद भी इस दिशाा में प्रयासरत है।

3. **विद्यालयों की कार्यप्रणाली एवं प्रक्रियाओं पर दुशप्रभाव** –एक भाोध के अनुसार लॉकडाउन के समय शिक्षा के नये विकल्पों के कारण विद्यालयों की कार्यप्रणाली एवं प्रक्रियाओं पर अनेक प्रकार के दुशप्रभाव हुए हैं जिसमें निचले आर्थिक स्तर के बच्चों को साधनों के अभाव के कारण शिक्षा ना मिल पाना, लाइव कक्षाओं के माध्यम से सूचनाओं का सही से ना मिलना विद्यार्थियों के मूल्यांकन को प्रभावित करता है। इसके साथ साथ शिक्षकों का उचित प्रशिक्षण ना होना भी विद्यालयों की कार्यप्रणाली एवं प्रक्रियाओं को बाधित करता है।

4. **छात्रों के लिए शिक्षण संस्थान बन्द** – संयुक्त राश्ट्र की संस्था, विशव स्वास्थ्य संगठन द्वारा कोरोना वायरस को वैशिवक महामारी घोशित करते ही इससे निपटने के प्रयास तेज कर दिये गये जिसके कारण दुनियां के तमाम देशाों में विद्यालय बंद कर दिये गये। इससे 36 करोड़ विद्यार्थियों की शिक्षा प्रभावित हुई है। छात्रों की शिक्षा इस महामारी के कारण प्रभावित हुई है, जिससे छात्र परेशाान रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार पांच में से एक विद्यार्थी की शिक्षा प्रभावित हुई है। कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए 15 देशाों ने राश्ट्रीय स्तर पर विद्यालयों को बन्द किया है वही भारत समेत 14 अन्य देशाों ने चुनिंदा जगहों पर विद्यालय तथा शिक्षण संस्थान बंद किये हैं।

5. **मूल्यांकन में सही आधार का अभाव** – कोरोना के कारण विद्यालय तथा शिक्षण संस्थान बंद कर दिये गये जिसके कारण ना तो सभी बच्चों को समान रूप से शिक्षा मिल पायी और ना ही उनका मूल्यांकन सही से हो पाया। मूल्यांकन का उचित आधार ना होने के कारण शिक्षा विभाग द्वारा सभी बच्चों को अगली कक्षा में क्रमोन्नत कर दिया गया। जिसके कारण अनेक विद्यार्थियों को अपने सही मूल्यांकन ना होने का कशट सहना पड़ा है।

6. **बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति चिंता** – कोरोना के कारण सरकार, विद्यालय प्रशाासन, अध्यापकों, अभिभावकों तथा स्वयं छात्रों में स्वास्थ्य के प्रति चिंता के कारण शिक्षा व शिक्षण कार्यों को टाल दिया गया। सरकार के लिए भी बालकों का स्वास्थ्य गंभीर चिंता का कारण बना तथा आवशयक निर्देशा जारी किये गये, विद्यालय प्रशाासन द्वारा इन निर्देशाों को गंभीरता से लागु किया गया, तथा अध्यापकों, अभिभावकों तथा स्वयं छात्रों द्वारा जागरूकता के साथ इन निर्देशाों का पालन किया गया।

7. **अधूरी विद्यालयी शिक्षा** – कोरोना के कारण बोर्ड की परीक्षाएं रद्द हो जाने से छात्रों को ना तो सही ढंग से शिक्षा मिल पायी और ना ही सही से मूल्यांकन हो पाया जिसके कारण आगे की पढ़ाई, संकाय के चुनाव के साथ साथ महाविद्यालयों में प्रवेशा ना मिल पाने की समस्याओं का सामना करना पड़ा है। सही मूल्यांकन से विद्यार्थियों को उनके स्तर का पता चलता है और अपने स्तर के अनुसार ही वे आगे की राह पकड़ते है कि कौनसे संकाय का चुनाव करना है? कौनसे महाविद्यालय में प्रवेशा लेना है? आगे की पढ़ाई किस प्रकार करनी है? अतः सही से मूल्यांकन ना हो पाने के कारण आगे की पढ़ाई, संकाय के चुनाव के साथ साथ महाविद्यालयों में प्रवेशा ना मिल पाने की समस्याओं का सामना करना पड़ा है।

8. **ऑनलाइन शिक्षा और साइबर अपराध** – लॉकडाउन के समय ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग अब बड़े स्तर पर हो रहा है, भारत जैसे विकासशील देशाों में जहां अच्छा भी है तो वहीं ऑनलाइन शिक्षा व परीक्षा के दुश्परिणाम भी हैं। विद्यालय भी छात्रों की ऑनलाइन परीक्षा लेने लगे हैं वे प्रशनपत्र गूगल क्लासरूम पर डालते हैं और छात्रों में नकल करने की दुश्प्रवृति बढ़ रही है। पिछले कुछ सालों में जिस तरह से डाटा चोरी और परीक्षाए लीक होने में वृद्धि हुई है। उनमें ऑनलाइन शिक्षा का क्षेत्र सबसे आगे है। सोशाल मिडिया में दिन प्रतिदिन बढ़ रही भ्रामक सूचनाओं और साइबर अपराध ने ऑनलाइन शिक्षा व परीक्षा की अहमियत को कम किया है।

9. **निम्न वर्ग के विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा की सुलभता में बाधा** – –कोरोना के कारण निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की विद्यालयी शिक्षा सबसे ज्यादा प्रभावित हुई जिसके कारण अधिकतर निम्न वर्ग के विद्यार्थी शिक्षा से दूर होते गये। यद्यपि सरकार द्वारा समय रहते इन विद्यार्थियों को विद्यालय से जोड़े रखने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रयास किये गये हैं। बच्चों के लिए SMILE प्रोग्राम लागु किया गया जिसमें अध्यापकों द्वारा घर घर जाकर बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के प्रयास किये गये। इसके साथ साथ इन बच्चों को पहले मिड–डे मील दिया जाता था, जो विद्यालय बन्द होने के कारण सरकार द्वारा प्रत्येक बच्चे के हिसाब से उनके परिवार को राशान उपलब्ध करवाया गया। इन प्रयासों के बावजूद कोरोना के कारण निम्न वर्ग के बालकों का विद्यालयी शिक्षा सही ढ़ंग से नहीं मिल पायी जिसका दुश्प्रभाव वर्तमान में भी विद्यालयों में नामांकन और ठहराव के आंकड़ों में देखने को मिल रहा है।

10.विद्यालयी शिक्षा पर अतिरिक्त अधिभार– कोरोना महामारी में विद्यालय से बालकों को जोड़े रखने के लिए सरकार को अनेक प्रकार के अतिरिक्त कार्य करने पड़े जैसे ऑनलाइन या अन्य विकल्पों के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था तकनीकी उपकरणों व संसाधनों की व्यवस्था, मिड–डे मील का राशान बच्चों के अभिभावकों में वितरण जैसे अनेक कार्यों के लिए अतिरिक्त व्यय करना पड़ा है। इसके साथ ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) के अन्तर्गत स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग के अनुमानानुसार महामारी के कारण बंद हुए विद्यालयों को फिर से खोलने के लिए स्वच्छता और क्वारंटाइन उपायों हेतु प्रति विद्यालय एक लाख रूपये तक खर्च करने की आवशयकता है। लगभग 3.1 लाख सरकारी विद्यालयों, जिनके पास सूचना एवं संचार तकनीक (ICT) सुविधाएं नहीं है, को ऐसी सुविधाओं से लैस करने के लिए केन्द्र सरकार 55840 करोड़ रूपये का बजट प्रस्तावित करेगी।

11. **ऑनलाइन शिक्षण की महंगी व्यवस्था**– शिक्षण क्षेत्र पर कोरोना (COVID-19) महामारी और लॉकडाउन के प्रभाव ने शिक्षण संस्थाओं को शिक्षण माध्यमों के नये विकल्पों पर विचार करने हेतु विवशा किया है। भारत में ई–संचार शिक्षा अपनी भौशावावस्था में है, आवशयक है कि इसकी राह में मौजूद विभिन्न चुनौतियों को संबोधित कर ई–संचार शिक्षा के रूप में एक नये शिक्षण विकल्प को बढावा दिया जाये। जिसके लिए हाल ही में कार्ययोजना तैयार कर सरकार द्वारा निम्नलिखित घोशणाएँ की गई हैं–

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) के अन्तर्गत स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग के अनुमानानुसार महामारी के कारण बंद हुए विद्यालयों को फिर से खोलने के लिए स्वच्छता और क्वारंटाइन उपायों हेतु प्रति विद्यालय एक लाख रूपये तक खर्च करने की आवशयकता है। लगभग 3.1 लाख सरकारी विद्यालयों, जिनके पास सूचना एवं संचार तकनीक (ICT) सुविधाएं नहीं है, को ऐसी सुविधाओं से लैस करने के लिए केन्द्र सरकार 55840 करोड़ रूपये का बजट प्रस्तावित करेगी। मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) ने आगामी वर्शों में डिजिटल पाठ्यक्रम सामग्री और संसाधनों के विकास एवं अनुवाद पर 2306 करोड़ रूपये खर्च करने का प्रस्ताव किया है।

केन्द्र सरकार ने वर्शा 2026 तक देशा भर के विभिन्न विशवविद्यालयों में पढ़ने वाले लगभग 4.06 करोड़ छात्रों (देशा की कुल छात्र संख्या का लगभग 40 प्रतिशात) को लैपटॉप और टैबलेट प्रदान करने की भी योजना बनाई है तथा इस कार्य के लिए कुल 60900 करोड़ रूपये का बजट निर्धारित किया गया है। स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग के अनुसार, केन्द्र और राज्य उपकरण उपलब्ध कराने की लागत को फिलहाल 60:40 के अनुपात में साझा करेंगे। इस प्रकार धीरे–धीरे भारत समेत सम्पूर्ण वैशिवक परिस्थितियाँ ई–शिक्षा अथवा ई–संचार शिक्षा की और लगातर बढ़ रही हैं।

ई–संचार शिक्षा – ई–शिक्षा अथवा ई–संचार शिक्षा से तात्पर्य अपने स्थान पर ही इंटरनेट व अन्य संचार उपकरणों की सहायता से प्राप्त की जाने वाली शिक्षा से है। ई–संचार शिक्षा के विभिन्न रूप हैं, जिसमें वेब आधारित लर्निंग, मोबाइल आधारित लर्निंग या कम्प्यूटर आधारित लर्निंग और वर्चुअल क्लासरूम इत्यादि ामिल हैं। लेकिन कोरोना (COVID-19) महामारी और लॉकडाउन के प्रभाव के कारण विद्यार्थियों को तात्कालिक परिस्थितियों में अपने अध्ययन की निरन्तरता के लिए ऑनलाइन अध्ययन के लिए मोबाईल या कम्प्यूटर की व्यवस्था करनी पड़ी है। इसके साथ साथ कोरोना (COVID-19) महामारी ने अभिभावकों को भी बालकों की शिक्षा तथा स्वास्थ्य के कारणों के कारण ई–संचार शिक्षा के उपाय के लिए सोचने को मजबूर किया है जिनकी लागत का बोझ भी अभिभावकों पर पड़ा है।

12. **बच्चों से सम्बन्ध या संवाद का अभाव** – स्कूल में विविध सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से संबधित छात्र आते हैं। कुछ को अपनी शिक्षा में अपने माता–पिता का पूरा सहयोग मिलता है, लेकिन कुछ मामलों में, माता–पिता की अशिक्षा के कारण या यदि वे अपने घरेलू काम में बेहद व्यस्त हैं, तो वे अपने बच्चों का सहयोग करने में सक्षम नहीं होते है। सभी छात्रों के पास घर पर डिजिटल उपकरण उपलब्ध नहीं हैं। उपलब्धता की स्थिति में इन साधनों तक उनकी पहुँच नही होती है। क्योंकि मोबाइल आदि उपकरण उन वयस्कों के होंगे जो घर से बाहर काम पर जाते हैं तथा उन्हे घर पर नही छोड़ सकते है। इसलिए, डिजिटल शिक्षा की योजना से भी शिक्षकों का निम्न वर्ग के बच्चों से सम्बन्ध स्थापित करना संभव नहीं हो पाया है।

13. **बच्चों की आवशयकताओं की पहचान का अभाव** – हालांकि सरकार द्वारा तथा विद्यालय प्रशाासन द्वारा विद्यार्थियों की शिक्षा में निरन्तरता बनाये रखने हेतु विविध प्रकार के कार्यक्रम चलाये गये लेकिन प्रकार के कार्यक्रमों द्वारा भी विद्यार्थियों को अपने अध्ययन में किस प्रकार की आवशयकता है ये जानना मुशिकल रहा है। संस्थाध्यक्ष अथवा शिक्षक प्रत्येक बच्चे के लिए विभिन्न आईसीटी सुविधाओं की आवशयकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता है।

14. **विद्यार्थियों में सोशाल मिडिया के हानिकारक उपयोग को बढ़ावा**– कोरोना काल में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिए ऑनलाइन शिक्षण को महत्व दिया गया जिससे बच्चों में इन्टरनेट, मोबाईल तथा सोशाल मिडिया में आकर्शण बढ़ गया है। अधिकांशा बच्चों ने शिक्षा ग्रहण करने की आयु में फेसबुक, ट्वीटर, इन्स्टाग्राम पर अपने अकाउन्ट बना रखे हैं तथा अध्ययन के बहाने से इनका उपयोग निरन्तर किया जा रहा है। बच्चों को सोशाल मिडिया का पूर्णतः ज्ञान न होने के कारण वे अपना अधिक से अधिक समय सोशाल मिडिया साईट पर सर्फिंग कर के बर्बाद कर रहे हैं।

15. **विद्यार्थियों में स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव**– कोरोना काल में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिए ऑनलाइन शिक्षण को महत्व दिया गया। डिजिटल उपकरणों का उपयोग करते हुए एक व्यक्ति जो आसन और अभ्यास पूरे दिन अपनाता है, वह किसी के स्वास्थ्य और कल्याण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है। लंबे समय तक एक ही मुद्रा में रहना अवांछनीय है। इसके अलावा, डिजिटल उपकरणों के लंबे समय तक संपर्क से स्वास्थ्य और कल्याण के अन्य पहलुओं पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। लैपटोप या मोबाइल द्वारा सीखने के लिए कुर्सी–मजे पर कैसे बैठना चाहिए, यह बहुत महत्वपूर्ण है।

निश्कर्श – कोरोना काल में विद्यालयी शिक्षा पर बहुत गहरा नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। जिस प्री प्राइमरी और प्राइमरी स्तर पर छात्र विद्यालयी माहौल में शिक्षक की अंगुली पकड़कर बुनियादी शिक्षा हासिल करते हैं, वो पिछले दो साल से बंद है। बच्चों के लिए असहजता उत्पन्न करताा है, दुशिचंता एवं तनाव को बढ़ाता है। छात्रों की मनःस्थिति कमजोर हुई है। लॉकडाउन के समय शिक्षा के नये विकल्पों के कारण विद्यालयों की कार्यप्रणाली एवं प्रक्रियाओं पर अनेक प्रकार के दुश्प्रभाव के कारण निचले आर्थिक स्तर के बच्चों को साधनों के अभाव के कारण शिक्षा ना मिल पाना, लाइव कक्षाओं के माध्यम से सूचनाओं का सही से ना मिलना विद्यार्थियों के मूल्यांकन को प्रभावित करता है। इसके साथ साथ शिक्षकों का उचित प्रशिक्षण ना होना भी विद्यालयों की कार्यप्रणाली एवं प्रक्रियाओं को बाधित करता है। छात्रों की शिक्षा इस महामारी के कारण प्रभावित हुई है, जिससे छात्र परेशाान रहे हैं। मूल्यांकन का उचित आधार ना होने के कारण शिक्षा विभाग द्वारा सभी बच्चों को अगली कक्षा में क्रमोन्नत कर दिया गया। जिसके कारण अनेक विद्यार्थियों को अपने सही मूल्यांकन ना होने का कशट सहना पड़ा है। कोरोना के कारण सरकार, विद्यालय प्रशाासन, अध्यापकों, अभिभावकों तथा स्वयं छात्रों में स्वास्थ्य के प्रति चिंता के कारण शिक्षा व शिक्षण कार्यों को टाल दिया गया। सोशाल मिडिया में दिन प्रतिदिन बढ़ रही भ्रामक सूचनाओं और साइबर अपराध ने ऑनलाइन शिक्षा व परीक्षा की अहमियत को भी कम किया है। कोरोना के कारण निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की विद्यालयी शिक्षा सबसे ज्यादा प्रभावित हुई जिसके कारण अधिकतर निम्न वर्ग के विद्यार्थी शिक्षा से दूर होते गये। कोरोना महामारी में विद्यालय से बालकों को जोड़े रखने के लिए सरकार को अनेक प्रकार के अतिरिक्त कार्य करने पड़े जैसे ऑनलाइन या अन्य विकल्पों के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था तकनीकी उपकरणों व संसाधनों की व्यवस्था, मिड–डे मील का राशान बच्चों के अभिभावकों में वितरण जैसे अनेक कार्यों के लिए अतिरिक्त व्यय करना पड़ा है। महामारी ने अभिभावकों को भी बालकों की शिक्षा तथा स्वास्थ्य के कारणों के कारण ई–संचार शिक्षा के उपाय के लिए सोचने को मजबूर किया है जिनकी लागत का बोझ भी अभिभावकों पर पड़ा है। निजी विद्यालयों में अभिभावक और शिक्षक जैसे–तैसे कुछ नन्हें छात्रों को पढ़ाई से जोड़े हुए हैं, मगर सरकारी विद्यालयों में छात्र पिछड़ रहे हैं। हालांकि सरकार की ओर से ऑनलाइन शिक्षा का दावा तो किया जा रहा है, लेकिन छोटे छात्रों के मामले में शिक्षा विभाग उसे खुद भी कारगर नहीं मान रहा है।

भौक्षिक उपादेयता –

ब्टप्क.19 सभी के लिए घातक बीमारी है, खासकर वरिश्ठ नागरिकों और बच्चों के लिए। इस महामारी ने लोगों के बीच असहनीय मनोवैज्ञानिक तनाव को बढ़ाया है। यह महामारी मनोवैज्ञानिक संकट और मानसिक बीमारी को बढ़ावा दे रही है। विद्यालयी शिक्षा में अध्यापकों ने इस विशम परिस्थिति में विद्यार्थियों को पढ़ाया यह बहुत ही चुनौति भरा कार्य रहा। इस कार्य में चुनौतियां आयेंगी और इन परिस्थितियों में भी शिक्षा की निरन्तरता को बनाये रखना आपदा में अवसर तलाशाने जैसा ही है। प्रस्तुत अध्ययन में पाया है कि यद्यपि इस महामारी ने अनेक रूप में विद्यालयी शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव डाला है परन्तु इस आपदा की स्थिति में अनेक अवसर भी प्राप्त हुए हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन निम्न रूप में भौक्षिक उपादेयता रखता है।

- प्रस्तुत अध्ययन द्वारा ब्टप्क.19 महामारी के विद्यालयी शिक्षा पर प्रभाव को जानने में सहायक हो सकेगा।
- यद्यपि कोरोना ने विद्यालयी शिक्षा को नुकसान पहुंचाया है लेकिन इसके कुछ सकारात्मक प्रभाव भी विद्यालयी शिक्षा पर पड़े है यथा . ऑनलाइन शिक्षा का विकास, शिक्षा के प्रति चेतना का विकास शिक्षा के नये विकल्पों का आसानी से अपनाना, बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का विकास, शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा, शिक्षा के प्रति सामूहिक प्रयास को बढ़ावा, निम्न वर्ग के विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा से जोड़ने के अधिक प्रयास, गम्भीर परिस्थिति में प्रयासों की सराहना, अभिभावकों में बच्चों के स्वास्थ्य एवं शिक्षा के प्रति जागरूकता का विकास, साफ–सफाई के प्रति जागरूकता का विकास, अनुशाासन की समझ का विकास आदि के क्षेत्र में COVID-19 महामारी का विद्यालयी शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। प्रस्तुत अध्ययन द्वारा ब्टप्क.19 महामारी के विद्यालयी शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव को जानने तथा विद्यालयी शिक्षा में सुधार में सहायक है।
- प्रस्तुत अध्ययन द्वारा COVID.19 महामारी के विद्यालयी शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव को जानने तथा विद्यालयी शिक्षा में उस नकारात्मक प्रभाव को जानने व सुधार में सहायक है।

सुझाव :

नीति निर्धारकों हेतु सुझाव :

- यद्यपि कोरोना ने विद्यालयी शिक्षा को नुकसान पहुंचाया है लेकिन इसके कुछ सकारात्मक प्रभाव भी विद्यालयी शिक्षा पर पड़े है, कोरोना के प्रभाव के कारण विद्यालयी शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा को विकल्प के रूप में विकसित होने में सकारात्मक भूमिका निभाई है। अतः नीति निर्धारकों चाहिए कि विद्यालयी शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा को विकल्प के रूप में विकसित करने के अधिक से अधिक प्रयास करे।
- लॉकडाउन तथा स्वास्थ्य की चिंता के कारण शिक्षा में पिछड़ जाने वाले बच्चों को पुनः मुख्य धारा में लाने हेतु योजना बनाकर प्रयास करे।
- कोरोना काल में शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन शिक्षा के विकल्प पर मेहनत की गई है अतः ऑनलाइन शिक्षा के विकास हेतु उपयुक्त संसाधनों की व्यवस्था विद्यालयों में की जानी चाहिए।

- सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति में शिक्षा के क्षेत्र में नवीन भोध, तथा नवाचार को बढ़ावा दिया जाना चाहिए जिससे इस प्रकार की स्थितियों से निपटने हेतु समय रहते योजना बनाई जा सके और शिक्षा की निरंतरता में कोई व्यवधान ना हो।
- बच्चों के लिए आवशयकतानुसार वैक्सीन उपलब्ध करवाकर सौ प्रतिशात वैक्सीनेशान करने का प्रयास करना चाहिए।

विद्यालयों हेतु सुझाव :

- विद्यालय प्रशाासन को चाहिए कि विद्यालय में स्वच्छता का वातावरण रखें तथा बच्चों के स्वास्थ्य की समय समय पर जांच की उचित व्यवस्था करनी चाहिए।
- विद्यालयों द्वारा बच्चों के सौ प्रतिशात वैक्सीनेशान के लिए विद्यालय प्रांगण में वैक्सीनेशान के लिए करना चाहिए।
- विद्यालयों द्वारा लॉकडाउन तथा स्वास्थ्य की चिंता के कारण शिक्षा में पिछड़ जाने वाले बच्चों को पुनः मुख्य धारा में लाने हेतु अतिरिक्त प्रयास करना चाहिए।

अध्यापकों हेतु सुझाव :

- अध्यापक स्वयं अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें जिससे वे अध्यापन की निरन्तरता के साथ साथ विद्यालय को संक्रमण से सुरक्षित कर सकें।
- अध्यापकों को शिक्षा में पिछड़ जाने वाले बच्चों को पुनः मुख्य धारा में लाने हेतु अतिरिक्त प्रयास कर उन्हें अन्य विद्यार्थियों के समान स्थिति में लाने का प्रयास करना चाहिए।
- सरकार द्वारा जारी किये गये दिशाा निर्देशाों का पालन करें तथा बच्चों को भी इस प्रकार की स्थिति से अवगत कराकर उन्हें हमेशाा जागरूक रखने का प्रयास करना चाहिए।
- विद्यालय में स्वस्थ वातावरण में सहयोग करें तथा अपने विद्यार्थियों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करें।

विद्यार्थियों हेतु सुझाव :

- विद्यालय में स्वस्थ वातावरण में सहयोग करें तथा अपने अभिभावकों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करें।
- हमेशाा अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें तथा आवशयक दिशाा निर्देशाों का पालन करें।
- विद्यार्थियों को चाहिए कि अपने अध्ययन में निरन्तरता बनाये रखें जिसके लिए विद्यालय में अध्ययन के साथ साथ ऑनलाईन अध्ययन भी करना चाहिए।

आगामी शोध अध्ययन हेतु सुझाव–

1. कोविड–19 के सन्दर्भ में शिक्षकों के आत्म–विशवास, संवेगात्मक परिपक्वता, जीवन संतुश्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
2. कोविड–19 के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर ऑनलाइन अध्ययन के प्रभाव का अध्ययन विशय पर भोध कार्य किया जा सकता है।
3. विद्यार्थियों की अध्ययन आदत, बुद्धि स्तर, एवं सृजनात्मकता पर कोविड–19 के तुलनात्मक प्रभाव का अध्ययन विशय पर भोध कार्य किया जा सकता है।
4. कोविड–19 के संदर्भ में कक्षा शिक्षण तथा ऑनलाइन अध्ययन का विद्यार्थियों की भौक्षिक उपलब्धि पर तुलनात्मक प्रभाव का अध्ययन विशय पर भोध कार्य किया जा सकता है।
5. कोविड–19 के संदर्भ में शिक्षकों के गम्भीर आवेग, भय एवं सुरक्षा–असुरक्षा की प्रवृति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
6. कोविड–19 के संदर्भ में शिक्षकों के कर्त्तव्य पालन, जीवन भौली एवं ध्यान भाक्ति में वृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
7. कोविड–19 का विद्यालय वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
8. कोविड–19 के संदर्भ में अन्य मनोवैज्ञानिक कारको जैसे व्यक्तिगत मूल्य, आकांक्षा स्तर, एवं सृजनात्मकता आदि चरों को लेकर अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

संयुक्त राष्ट्र भौक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (युनेस्को) की रिर्पोट
Khandelwal A, Kumar A. Government of India Initiatives for COVID-19: Higher Education; Int. J. of Adv. Res,2020:8:747-759. doi.org/10.21474/IJAR0 1/11552
Jena PK. Impact of Covid-19 on School education in India. International Journal of Advanced Education and Research,2020:5(3):77-81.
MoE. Government of India. National Education Policy, 2020.
Haleem A, Javaid M, Vaishya R. Effects of COVID-19 Pandemic in Daily Life. Current Medicine Research and Practice,2020:10(2):78-79. doi.org/10.1016/ j.cmrp.2020.03.011
अर्पिता आर्या. आज तक. 26 जून 2022
शिाशीर चौरसिया. नवभारत टाइम्स. 7 मई 2021
Ministry of Education. रिपोर्ट. स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग. 2020. 44.